

भारत और चीन के बीच व्यापारिक और आर्थिक संबंध भारत के राजनीतिक माहौल से प्रभावित

पारुल सोलंकी¹, प्रो. राजेन्द्र कुमार वैद्य²

¹शोधार्थी

एम एल बी आर्ट्स एंड कामर्स कोलेज, ग्वालियर

सार

चीन और भारत दो प्राचीन सभ्यताएं हैं और उनके बीच संबंध भी बहुत पुराने हैं। वर्तमान में, दोनों राज्य अपनी जनसंख्या और लगातार बढ़ती और प्रगतिशील अर्थव्यवस्थाओं के मामले में हाथी के समान कद का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन और भारत के बीच संबंध शांति, सम्मान और आपसी अस्तित्व और संघर्ष, युद्ध और अविश्वास की भावना के बीच काफी उतार-चढ़ाव वाले रहे हैं। कई लंबे समय से चले आ रहे मुद्दे चीन-भारत संबंधों को परेशान कर रहे हैं। सीमा विवाद, तिब्बती मुद्दा, जल बंटवारे का मुद्दा और पाकिस्तान के साथ चीन की घनिष्ठता आदि चीन-भारत संबंधों में बाधा बन रहे हैं। हालांकि, आर्थिक सुधारों और उदारीकरण ने चीन और भारत दोनों के लिए नए रास्ते खोले हैं। 1988 में राजीव गांधी की चीन यात्रा सराहनीय है, जिसके परिणामस्वरूप राजनयिक संबंध बहाल हुए, दोनों राज्यों में राजनीतिक नेताओं, व्यापारियों, शिक्षाविदों, विद्वानों और छात्रों, मीडियाकर्मियों की यात्राएँ हुईं। वैश्विक अर्थव्यवस्था में उनके एकीकरण के संदर्भ में चीन और भारत। वे एशिया के साथ-साथ विश्व परिदृश्य में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ हैं। दोनों अर्थव्यवस्थाओं को अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा तेजी से आर्थिक विकास की क्षमता वाले उभरते बाजारों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह पत्र दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच द्विपक्षीय व्यापार की जांच और तुलना करने और भविष्य में भारत और चीन के बीच व्यापार और अर्थव्यवस्था सहयोग के निहितार्थ निकालने का एक प्रयास है। विशेष रूप से, यह पत्र चीन के साथ भारत के व्यापार संतुलन में प्रमुख प्रवृत्तियों और परिवर्तनों की जांच करता है; चीन को कुल आयात या निर्यात में। परिणाम दोनों देशों के लिए, विश्व अर्थव्यवस्था में खुलने और एकीकृत होने के सकारात्मक विकास प्रभावों को साबित करते हैं।

कीवर्ड: भारत, चीन, व्यापार, सहयोग, आर्थिक संबंध, आर्थिक मुद्दे

परिचय

चीन और भारत, दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं, और दोनों मिलकर दुनिया की कुल आबादी का एक तिहाई से भी अधिक हिस्सा बसाते हैं।¹ यह चीन-भारत संबंधों को न केवल चीन और भारत में रहने वालों के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण बनाता है।² जैसा कि चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने 2004 में आसियान (दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन) की अपनी यात्रा के दौरान कहा था, क्या चीन-भारत संबंधों का इक्कीसवीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ेगा। ऐसा कहने के बावजूद, इस संबंध के बारे में आश्चर्यजनक रूप से शांत चर्चा हो रही है। इस प्रकार, यह शोध संबंधों की प्रकृति, साथ ही सुरक्षा-संबंधी मुद्दों के प्रति चीन और

भारत के रवैये का विश्लेषण करके चर्चा में योगदान करने की उम्मीद करता है। अधिक ठोस रूप से यह समझने की कोशिश करें कि व्यापार और सहयोग ने संबंधों के विकास पर क्या प्रभाव डाला है।

चीन की 20 000 किमी लंबी सीमा 14 देशों से लगती है, इसके अलावा यह कई और द्वीप देशों के साथ अपना निवास स्थान साझा करता है। उनमें से कई के साथ, चीन का भूमि या समुद्री आर्थिक क्षेत्रों पर विवाद है, और कुछ मामलों में तो इनके लिए युद्ध भी हुआ, जैसे 1962 के चीन-भारतीय युद्ध, 1969 के चीन-सोवियत सीमा संघर्ष या 1979 के चीन-वियतनाम युद्ध के मामले में। इनमें से बहुत से क्षेत्रीय विवाद आज भी निर्णायक रूप से अनसुलझे हैं - जैसा कि दक्षिण चीन सागर, डियाओयू द्वीप या चीन-भारतीय सीमा के कुछ हिस्सों के मामले में है। वे लंबे समय तक ठंडे पड़े रहे, लेकिन चीन की आर्थिक ताकत के उदय के साथ, वे 2008 से फिर से गरमाने लगे। ऐसा क्यों है और क्यों वे आज तक ज्यादातर अनसुलझे हैं मैं दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देशों और क्षेत्रीय आधिपत्य वाले देशों - चीन और भारत के मामले पर शोध करना चाह पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और भारत के बीच संबंधों की शुरुआत बहुत खराब नहीं रही है। भारत 1949 में पीआरसी को मान्यता देने वाला पहला गैर-समाजवादी देश था और दोनों देशों ने तथाकथित "हनीमून" अवधि का अनुभव किया, द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद सबसे अच्छे आपसी संबंधों का आनंद लिया। 1954 में, भारत ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पाँच सिद्धांतों को बढ़ावा देने में चीन का साथ दिया। हालाँकि आपसी संबंधों में गर्मजोशी पाँच सिद्धांतों से आगे नहीं बढ़ पाई, जो लंबे समय में लागू होने में विफल रहे। हालाँकि, यह हनीमून पहले दुश्मनी में बदल गया जब भारत ने तिब्बती अलगाववादी आंदोलन का समर्थन करना शुरू कर दिया और बाद में 1962 में सीमा क्षेत्रों को लेकर चीन-भारत युद्ध में बदल गया।

विश्लेषण तीन नीति स्तंभों (आयामों) के विचार का अनुसरण करेगा जो हमें सीमा विवाद के पीछे की पूरी तस्वीर की समझ प्रदान करेगा। पाठक को और अधिक जानकारी से लैस करने और इन नीतियों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए। मैं आपसी संघर्ष की सबसे महत्वपूर्ण तिथियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक ग्राफ प्रस्तुत करना चाहूँगा। चूँकि विश्लेषण अक्सर इन तिथियों पर आधारित होगा और नीतियों को कुछ स्थितियों से संबंधित करेगा।

इससे पहले कि हम चल रहे सीमा विवाद से संबंधित सटीक नीतियों के विश्लेषण पर आगे बढ़ें, इन नीतियों को एक बड़ी तस्वीर में रखने के लिए अतीत और वर्तमान के सामाजिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। चूँकि लोग और जिस तरह से वे विभिन्न स्थितियों की व्याख्या करते हैं, वह अनिवार्य रूप से इन नीतियों को संचालित करता है। भले ही यह थीसिस मुख्य रूप से संघर्ष की वर्तमान स्थिति और क्षेत्रीय नीतियों के अध्ययन के माध्यम से इसे हल न किए जाने पर केंद्रित है। अतीत में भी गहराई से जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है, खासकर तब जब आज चीन और भारत की नीतियां एक ऐसे संघर्ष से जुड़ी हैं जो पिछली राजनीति से विरासत में मिली है। आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक नीतियों पर केवल ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं होगा। मुख्य रूप से एक ऐसी भूमि के लिए लड़ाई के रूप में कमियों को दूर करने में असमर्थता के कारण जो न तो आर्थिक, राजनीतिक या रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती है। इस प्रकार हमें यह संकेत मिलता है कि दोनों पक्ष कुछ "अधिक" के लिए लड़ रहे हैं। हालाँकि इस "अधिक" को केवल उनकी ऐतिहासिक विरासत या प्रतीकवाद के कुछ अस्पष्ट हिस्से के रूप में व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, स्थिति का सही मायने में सुसंगत अवलोकन प्रदान करने के लिए, शोध का एक हिस्सा, विशेष रूप से इस स्तंभ में, नीचे से ऊपर की ओर दृष्टिकोण के माध्यम से किया जाएगा। न केवल राज्य की राजनीति पर ध्यान केंद्रित करना, बल्कि व्यक्तियों और राष्ट्रीय

पहचान के बारे में उनकी धारणाओं पर भी ध्यान केंद्रित करना। साथ ही उनके आस-पास की दुनिया की अलग-अलग व्याख्याओं से उपजा है, जो अपने आप में सही हो सकती हैं, लेकिन दूसरे पक्ष की व्याख्या से बहुत अलग हैं।

भारत और चीन की राजनीति

भारत और चीन दुनिया की दो सबसे पुरानी सभ्यताएँ हैं, जिनमें लचीलापन का गुण है, जिसने उन्हें सदियों से और बाधाओं के बावजूद जीवित रहने और समृद्ध होने में सक्षम बनाया है। दोनों की एक लंबी, समृद्ध रणनीतिक परंपरा है। प्राचीन चीन और भारत के बीच राजनीतिक संपर्क बहुत कम और दूर-दूर तक थे। सांस्कृतिक क्षेत्र में, दोनों देशों के बीच संबंध बौद्ध धर्म के उद्भव से जुड़े हैं। हिंदू और बौद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव मध्य एशिया के माध्यम से चीन में फैल गए, और चीनी विद्वानों को नालंदा और तक्षशिला में भारतीय विश्वविद्यालयों में भेजा गया। हालाँकि, चीनी और भारतीय सभ्यताएँ ईसाई युग की पहली कुछ शताब्दियों के दौरान एक-दूसरे पर प्रतिक्रिया करती थीं, लेकिन धार्मिक-सांस्कृतिक संपर्क की प्रक्रिया लगभग दसवीं शताब्दी ई. के बाद बंद हो गई (भारत पर इस्लामी आक्रमणों के साथ)। तब से, दोनों देश एक हजार साल से अधिक समय तक ऐसे रहे जैसे कि वे एक-दूसरे के अस्तित्व से बेखबर हों, उन्नीसवीं सदी के आगमन तक, जब दोनों यूरोपीय शक्तियों के प्रभाव में आ गए।

यह शोध कार्य शीत युद्ध के बाद के युग में विशेष रूप से 1991 से 2017 तक दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंधों के कायापलट पर केंद्रित है। यह हमें दोनों देशों के बीच राजनीतिक रणनीतियों और संबंधों की समस्याओं, संभावनाओं और परिणामों को समझने में मदद कर सकता है। भारत और चीन के संबंध तब से तनावपूर्ण हैं जब सीमा विवाद ने 1962 में पूर्ण युद्ध और 1967 और 1987 में सशस्त्र झड़पों का नेतृत्व किया था। एक चौथाई सदी से अधिक (1981 से) में आयोजित कई दौर की वार्ता विवादित दावों को हल करने में विफल रही है। विवादित सीमा पर शांति और सौहार्द बनाए रखने के लिए 1993 और 1996 में समझौते हुए थे। समाधान के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों पर एक समझौता 2005 में संपन्न हुआ था। एक अनुसुलझी सीमा वर्तमान में चीनी हितों के लिए भी अनुकूल है क्योंकि पश्चिमी क्षेत्र में चीन के दावे कश्मीर पर भारत-पाकिस्तान विवाद, चीन-भारतीय क्षेत्रीय विवाद में पाकिस्तान के हितों और दो मोर्चों पर भारत को रणनीतिक दबाव में रखने में बीजिंग की रुचि से जटिल हैं। भले ही क्षेत्रीय विवाद हल हो गया हो, चीन और भारत अभी भी एक प्रतिस्पर्धी संबंध बनाए रखेंगे।

क्षेत्रीय विवाद के अलावा अन्य कारक भी इस तनावपूर्ण और असहज रिश्ते में योगदान करते हैं। इनमें भारत के छोटे दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ चीन के संबंधों की प्रकृति (जिसमें उन्हें हथियार देना भी शामिल है); शीत युद्ध के गठबंधनों की विरासत (बीजिंग-इस्लामाबाद-वाशिंगटन बनाम मास्को-नई दिल्ली); तिब्बत और कश्मीर में जारी अशांति; भारत द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखे जाने वाले क्षेत्रों में चीन का अतिक्रमण; हिंद महासागर में नौसेना की उपस्थिति के लिए बीजिंग की योजना; संसाधन प्रतिस्पर्धा; शक्ति विषमता और विकासशील दुनिया और बहुपक्षीय मंचों के नेतृत्व के लिए प्रतिद्वंद्विता; और, हाल ही में, परमाणु और नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से भारत ने कभी भी चीन के आगे घुटने नहीं टेके। अस्थिर और तनावपूर्ण संबंधों का मूल कारण यहीं है: चीन को भारत की आर्थिक, सुरक्षा और कूटनीतिक नीतियों के संदर्भ बिंदु के रूप में देखते हुए, भारत के रणनीतिक विश्लेषकों ने लंबे समय से सैन्य रूप से चीन के साथ बने रहने की आवश्यकता पर जोर दिया है। शुरू में, भारत की परमाणु क्षमता का उद्देश्य केवल चीन को रोकना था, पाकिस्तान को नहीं। यह चीन-भारत संबंधों की प्रतिकूल प्रकृति है जिसने भारत और, बदले में, पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रमों को प्रेरित किया है।

लोकतंत्र पर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला लोकतंत्र है, इसलिए सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूपों को वहां व्यापक समर्थन प्राप्त है। और इसी तरह सरकार के अन्य गैर-लोकतांत्रिक स्वरूपों को भी। लगभग 79% भारतीय अपने लोकतंत्र की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं। इसमें 33% बहुत संतुष्ट ग्राहक शामिल हैं। कांग्रेस के समर्थकों (65%) की तुलना में भाजपा के समर्थक (84%) भारतीय लोकतंत्र से काफी अधिक खुश हैं। भारतीय लोकतंत्र की स्थिति अर्थव्यवस्था के बारे में जनता की राय को दर्शाती है। जो लोग भारत में आर्थिक परिस्थितियों को अनुकूल मानते हैं, उनके देश के लोकतंत्र से खुश होने की संभावना अधिक है। इसी तरह, जो लोग मानते हैं कि आज के बच्चे अपने माता-पिता की तुलना में आर्थिक रूप से बेहतर होंगे, वे लोकतंत्र से उन लोगों की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं जो आने वाली पीढ़ी के भविष्य के बारे में नकारात्मक हैं। लोग प्रत्यक्ष और प्रतिनिधि लोकतंत्र दोनों को अपनाते हैं। तीन-चौथाई भारतीय मानते हैं कि एक प्रतिनिधि लोकतंत्र जिसमें निवासी ऐसे लोगों को चुनते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या कानून बनता है, अपने देश पर शासन करने का एक प्रभावी तरीका होगा। इसी तरह के अनुपात इस बात से सहमत हैं कि व्यक्तियों के लिए, न कि निर्वाचित नेताओं के लिए, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर सीधे मतदान करना और यह चुनना बेहतर होगा कि क्या कानून बनता है।

भारत में आज़ादी के सात दशकों में कभी भी राष्ट्रव्यापी जनमत संग्रह नहीं हुआ है, लेकिन राज्य स्तर पर मतदान हुए हैं। लगभग दो-तिहाई भारतीयों का मानना है कि देश पर शासन करने का आदर्श तरीका पेशेवरों के लिए होगा, न कि चुने हुए राजनेताओं के लिए, जो देश के लिए सबसे अच्छा है उसके आधार पर चुनाव करें। भारत 38 में से सात देशों में से एक है, जिसमें साठ प्रतिशत से अधिक आबादी टेक्नोक्रेसी का समर्थन करती है। 55% भारतीय सरकार की ऐसी शैली पसंद करते हैं जिसमें एक मजबूत नेता विधायिका या न्यायपालिका के हस्तक्षेप के बिना चुनाव करता है, जबकि 53% सैन्य नियंत्रण के पक्ष में हैं।

भारत में किसी भी अन्य देश की तुलना में सत्तावादी सत्ता के लिए अधिक समर्थन है। इसलिए, भारत उन चार देशों में से एक है, जहाँ आधी से अधिक आबादी सैन्य शासन का समर्थन करती है। भारत का लोकतंत्र पिछले 40 वर्षों में चीन और उसके पड़ोसियों द्वारा अनुभव की गई निरंतर आर्थिक वृद्धि प्रदान करने में विफल रहा है। यह शायद देश का सबसे बड़ा मुद्दा है। इसके अतिरिक्त, यह गंभीर गरीबी को मिटाने में विफल रहा है। दिल्ली और मुंबई जैसे अधिक वैश्वीकृत शहरों में बौद्धिक अभिजात वर्ग की जीवनशैली भारत के सबसे गरीब निवासियों से मौलिक रूप से भिन्न है। कम वेतन, कम कौशल वाले व्यवसाय लाखों युवा भारतीयों के लिए सबसे संभावित व्यवसाय बने हुए हैं, खासकर उत्तर प्रदेश जैसे गरीब, आबादी वाले क्षेत्रों में, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में असंतुष्ट, वंचित मतदाता हैं। भारतीय राष्ट्रवाद के साथ-साथ लोकलुभावनवाद ने धार्मिक अल्पसंख्यकों - विशेष रूप से मुसलमानों और दलितों - को बलि का बकरा बनाकर हिंदू गौरव को बढ़ावा देकर इस आक्रोश को बढ़ावा दिया है। प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा पार्टी सदियों पुरानी हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रतीक हैं, जिसका दर्शन हिंदुत्व है। स्वतंत्रता के पहले से ही राष्ट्रवादियों का मानना रहा है कि भारत को दक्षिण एशिया के हिंदुओं की मातृभूमि होना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे पाकिस्तान इस क्षेत्र की मुस्लिम आबादी के लिए था।

➤ राजनीतिक भ्रष्टाचार और नेहरूवादी राज्य

यह तर्क देना लगभग एक पारंपरिक ज्ञान है कि नेहरूवादी राज्य भारतीय लोकतंत्र के उच्चतम मानकों का प्रतिनिधित्व करता था। नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता थे जिन्होंने कांग्रेस को एक राष्ट्रवादी आंदोलन से एक सरकार की पार्टी में बदल दिया। स्वतंत्रता के समय भारतीय राज्य द्वारा सामना की गई कठिनाइयों को देखते हुए - विभाजन, अलगाववादी आंदोलन, सांप्रदायिक दंगे और उपमहाद्वीपीय संरचनाएं - यह एक उत्कृष्ट उपलब्धि थी, खासकर तब जब कुछ प्रमुख कांग्रेसियों ने नेहरू के आधुनिक भारत के दृष्टिकोण पर गंभीर संदेह किया था। इस परिवर्तन के केंद्र में एक 'कांग्रेस प्रणाली' का निर्माण था - एक प्रमुख एक-पार्टी प्रणाली जिसमें कांग्रेस ने राजनीतिक विकास के कार्य को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के साथ जोड़ा। 'कांग्रेस प्रणाली' को चार मुख्य कारकों द्वारा एक साथ रखा गया था: नेहरू का व्यक्तित्व जिसने क्रमिक राजनीतिक विकास को बढ़ावा दिया; कांग्रेस संगठन जिसने पूरे देश को जोड़ने के लिए 'स्टील फ्रेम' प्रदान किया; एक प्रगतिशील विचारधारा जो संगठित राजनीतिक राय के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल कर सकती थी; और, सबसे बढ़कर, संरक्षण तक पहुंच और उसका वितरण। बाद वाला कांग्रेस को 'वोट-बैंक' बनाने में सक्षम बनाने में एक महत्वपूर्ण कारक था जिसने पार्टी को लगातार आम चुनाव जीतने में मदद की।

'कांग्रेस प्रणाली' का आधार सोवियत पैटर्न पर आधारित केंद्रीकृत आर्थिक नियोजन था, लेकिन इसे भारत के लोकतंत्र की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया गया था। एक आधिपत्यपूर्ण राज्य क्षेत्र स्थापित करने की योजनाएँ जो औद्योगिकीकरण को नियंत्रित करेगी, कांग्रेस द्वारा स्वतंत्रता से पहले तैयार की गई थीं, लेकिन 1950 के दशक की शुरुआत से, योजना आयोग के निर्माण और पंचवर्षीय योजनाओं के उद्घाटन के साथ, औद्योगिक विनियमन की एक व्यापक प्रणाली स्थापित की गई जिसने 'लाइसेंस-परमिट राज' की शुरुआत की - नौकरशाही और कांग्रेस द्वारा वितरित औद्योगिक और वाणिज्यिक लाइसेंसों के नियंत्रण, वितरण और बिक्री के माध्यम से शासन। संसाधनों का अधिक कुशल उपयोग करने के साधन के रूप में अभिप्रेत, केंद्रीकृत नियोजन के परिणाम बिल्कुल विपरीत थे, क्योंकि इसने किराया-चाहने वालों की शक्तिशाली लॉबी बनाई, जो औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं की जांच से बच सकते थे। जैसा कि रॉबर्ट वेड ने बताया है, नौकरशाही के राजनीतिक नियंत्रण की संवैधानिक कल्पना को 'अनुग्रह और कृपा राज्य' के उदय ने उलट दिया, जिसमें राजनेता, नौकरशाह और व्यवसायी शिकारी और ग्राहकवादी नीतियों का पालन करते थे, इस ज्ञान में कि राजनीतिक शक्ति के दुरुपयोग के खिलाफ कानूनी प्रतिबंधों को लागू करना मुश्किल होगा। वास्तव में नेहरूवादी युग के दौरान सार्वजनिक शक्ति के दुरुपयोग का पता लगाने और मुकदमा चलाने की प्रक्रिया मुख्य रूप से कांग्रेस तक ही सीमित थी - शायद ही कभी मुकदमा चला - जिसके परिणामस्वरूप कार्यकारी और न्यायिक संस्थानों को यह भूमिका सौंपी गई थी, व्यवस्थित रूप से कमजोर किया गया।

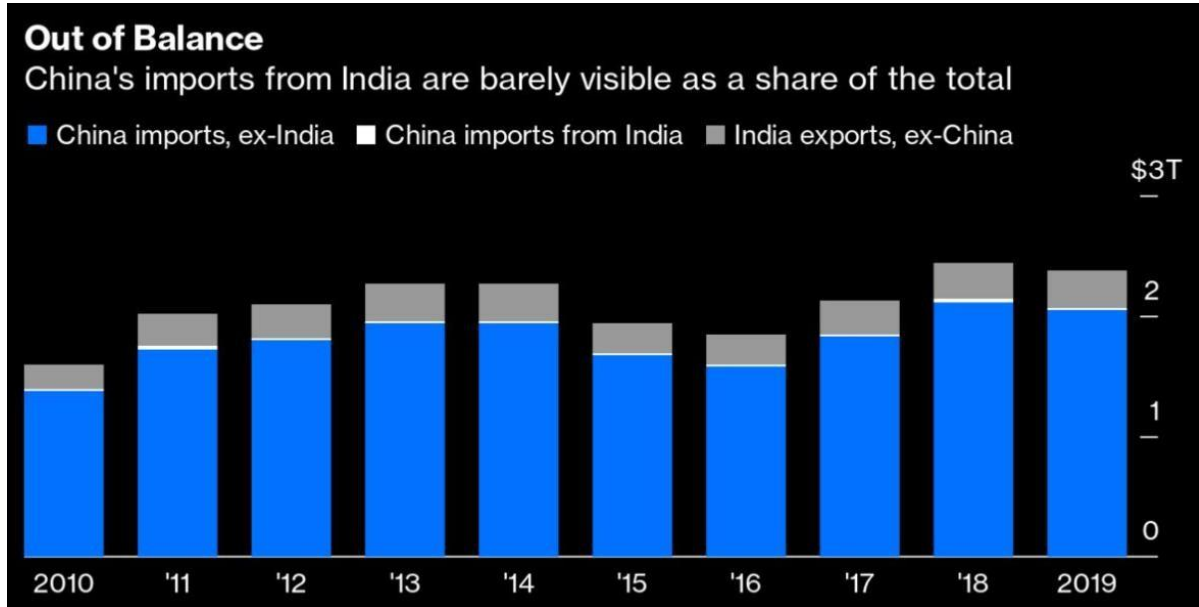
• चीन-भारत आर्थिक और व्यापारिक संबंध

चीनी और भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना कुछ हद तक संबंधित है। वे दोनों ही ज़्यादातर योजनाबद्ध अर्थव्यवस्थाओं के रूप में शुरू हुए, जिसमें राज्य को प्रमुख उद्योगों के निर्माण में अग्रणी भूमिका सौंपी गई थी। भारत ने 1991 में और चीन ने, कुछ हद तक, 1978 में अपने आपको खोला। भले ही दोनों देश उभरती हुई आर्थिक महाशक्तियों का दर्जा रखते हों, लेकिन चीन फिर से ऊपरी हाथ रखता है। जब हम 2000 से 2016 के

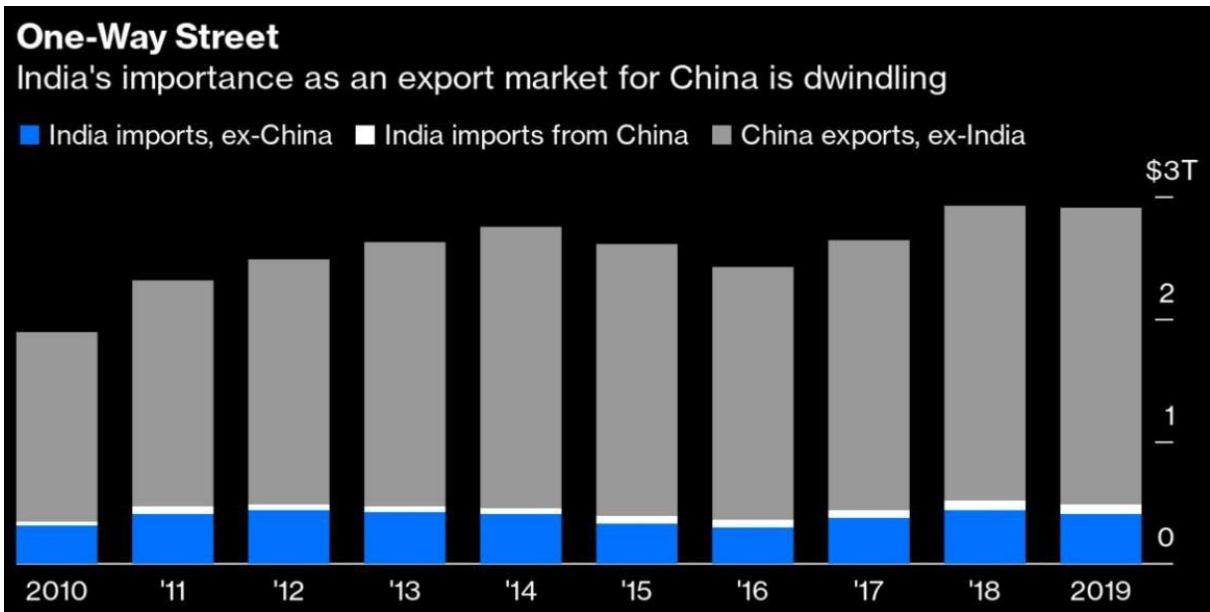
बीच की अवधि को देखते हैं। चीनी जीडीपी 1,2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 6,4 ट्रिलियन हो गई है, जबकि भारत की जीडीपी उसी समय सीमा में केवल 0,5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 1,8 ट्रिलियन हो गई है। फिर भी, दोनों देश दुनिया में सबसे अधिक जीडीपी वृद्धि वाले देशों में से एक हैं, जो सामान्य वर्षों में औसतन 6 से 10 प्रतिशत है। जब हम दो दिग्गजों के आर्थिक संबंधों को देखते हैं, तो वे हाल के वर्षों तक कभी भी महत्वपूर्ण नहीं रहे हैं।

1962 में भारत की हार के बाद, 1984 में द्विपक्षीय व्यापार सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर होने तक दोनों देशों के बीच संबंध काफी हद तक ठप रहे। जिसमें दोनों पक्षों के नेताओं ने सीमा विवाद को किनारे रखने का फैसला किया और "अर्थव्यवस्था जैसे गैर-विवादास्पद मुद्दों" पर सहयोग करने पर सहमति जताई। बाद में 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री गांधी की चीन यात्रा, 1996 में चीन के प्रधानमंत्री जियांग जेमिन की भारत यात्रा और 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वीजेपेयी की चीन यात्रा से यह संबंध और मजबूत हुआ। आपसी आर्थिक संबंधों में यह गर्मजोशी 1975 से 2017 के बीच की शांति अवधि से मेल खाती है, जिसके दौरान वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कोई महत्वपूर्ण झड़प नहीं हुई थी। इसलिए, सभी क्षेत्रीय मतभेदों के बावजूद, दोनों के बीच व्यापार फलफूल रहा था। जैसा कि दोनों पक्षों ने उस समय सीमा विवाद के ढांचे के भीतर अर्थव्यवस्था और व्यापार संबंधों के विषय को असुरक्षा मुक्त करने और इसे क्षेत्रीय मुद्दों से अलग विषय के रूप में मानने का फैसला किया। अंततः, 2008 में चीन कुछ समय के लिए अमेरिका को पीछे छोड़कर भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया।

चीन-भारत की तमाम बेरुखी और क्षेत्रीय मुद्दों के बावजूद, हाल के वर्षों में इसके सापेक्ष वि-सुरक्षाकरण के परिणामस्वरूप आपसी आर्थिक संबंध बहुत गहरे हैं। 2020 में, चीन ने भारत के निर्यात का 5 प्रतिशत और आयात का 14 प्रतिशत हिस्सा लिया है। सिर्फ 2000-2020 के बीच, चीन से भारत के आयात में 45 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि चीन भारत के साथ एक बड़ा व्यापार अधिशेष चलाता है और भारत चीनी सामानों पर बहुत अधिक निर्भर है। कुछ क्षेत्रों में, चीनी वर्चस्व और भी बड़ा है। उदाहरण के लिए, चीनी सेल फोन ब्रांड Xiaomi, Vivo और Oppo के पास 2020 में भारतीय सेल फोन बाजार में 72 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। भारत का फार्मास्युटिकल उद्योग, जो दुनिया में मात्रा के हिसाब से तीसरा सबसे बड़ा है, इसके अलावा अपनी सभी आपूर्ति का लगभग 68% चीन से आयात करता है। यह स्पष्ट तस्वीर बनाता है कि कैसे कुछ भारतीय उद्योग और समग्र रूप से अर्थव्यवस्था चीन पर इतनी निर्भर है। यदि चीनी नेता हिमालय में सीमा विवाद से इसे जोड़कर चीन-भारतीय व्यापार संबंधों को सुरक्षित करना शुरू करने का निर्णय लेते हैं, तो संभावित संघर्ष के दौरान चीन इसका लाभ उठा सकता है।



चित्र 1: चीन-भारत व्यापार स्थिति का दृश्य चित्रण



चित्र 2: चीन-भारत व्यापार स्थिति का दृश्य चित्रण

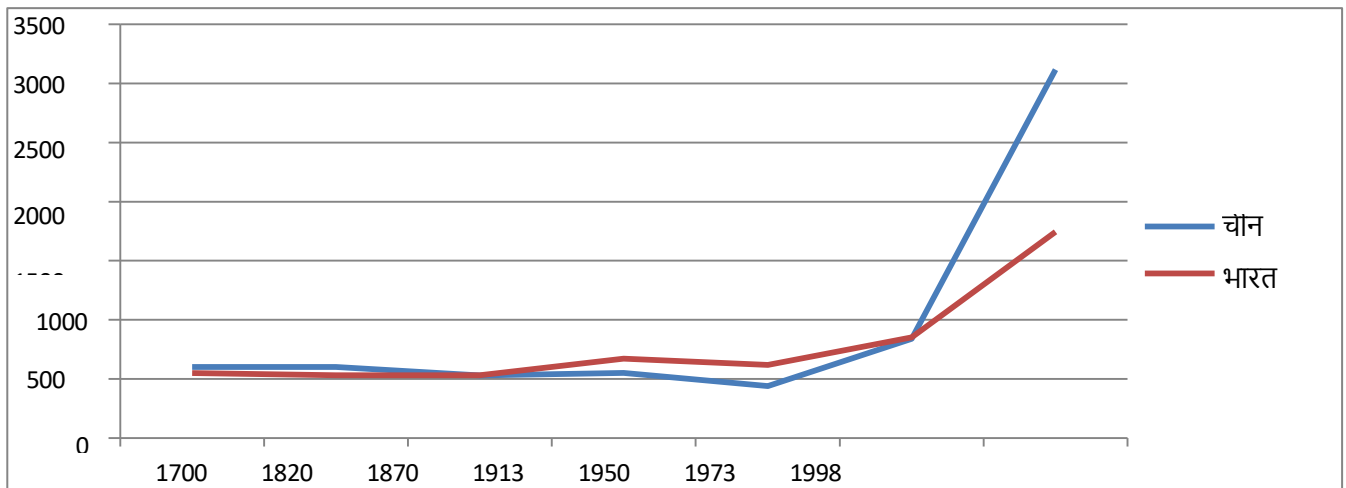
हालांकि, चीन पर भारतीय अर्थव्यवस्था की अत्यधिक निर्भरता में बदलाव आना शुरू हो गया है। भारतीय नेताओं को पहले ही एहसास हो चुका है कि चीन के प्रति उदार दृष्टिकोण से उन्हें बहुत कुछ हासिल नहीं हुआ। उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि अब तक भारत को चीन के साथ बहुत बड़ा व्यापार घाटा हुआ है, लगभग 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का थोड़ा सा निवेश हुआ है और कुछ चीनी ब्रांड भारतीय बाजार पर पूरी तरह से कब्जा कर रहे हैं। इस बीच, चीन में व्यापार करने की कोशिश करते समय भारतीय कंपनियों को भारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। चीन-भारत संबंधों को गहरा करने के बजाय, भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर देखा

है, जिसने भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में चीन को पीछे छोड़ दिया है। या इसने नवंबर 2020 में स्थापित एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के चीन के नेतृत्व वाले व्यापार ब्लॉक क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी में शामिल होने से इनकार कर दिया है। यह मोदी की ओर से एक अप्रत्याशित मोड़ है, क्योंकि भारत को अपने लगभग सभी आसपास के देशों में चीन की बेल्ट एंड रोड पहल की आर्थिक उपस्थिति से खतरा महसूस होने लगा है। श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार में BRI परियोजनाओं के साथ। फिलहाल, आर्थिक तनाव में कमी की संभावना नहीं है और हम शायद आगे भी एकतरफा कार्रवाई होते देखेंगे जब तक कि दोनों के बीच समान अवसर स्थापित नहीं हो जाते। उदाहरण के लिए, चीन भारत के प्रमुख निर्यातों जैसे आईटी और फार्मास्यूटिकल्स को आसान बाजार पहुंच प्रदान कर रहा है। अन्यथा, दोनों देश धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ते आर्थिक-सुरक्षा चक्र में फंसे रहेंगे।

आर्थिक अंतरनिर्भरता

चीन और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार 1980 के दशक के उत्तरार्ध में तेजी से बढ़ा, जब चीनी और भारतीय नेताओं के बीच राजनीतिक संवाद शुरू हुआ। इसके परिणामस्वरूप कई समझौते हुए, जिनका केंद्र बिंदु व्यापार था, जिससे साझा व्यापार हितों की पहचान हुई। इन समझौतों में एक व्यापार समझौता था जिसने उन्हें सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) का दर्जा दिया। इसके अलावा, 1991 में भारत के आर्थिक सुधारों के बाद एक समझौता हुआ जिसने दोनों देशों के बीच पहला सीमा व्यापार मार्ग खोला। ये केवल कुछ उदाहरण हैं जो संबंधों में सकारात्मक रुझान दिखाते हैं। इस प्रवृत्ति की आगे जांच की जाएगी, इस भाग में बाद में।

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (1990 अंतर्राष्ट्रीय डॉलर): 1700-1998.



चित्र 3: टीएन श्रीनिवासन, "चीन और भारत: आर्थिक प्रदर्शन, प्रतिस्पर्धा और सहयोग: एक अद्यतन", जर्नल ऑफ एशियन इकोनॉमिक्स 15, एल्सेवियर (2004), पृ. 615.

हम तालिका 1 में चीन और भारत के आर्थिक प्रदर्शन के समानांतर विकास को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह पहली बार था जब चीन ने 1979 में अपनी खुले दरवाजे की नीति शुरू की थी, तब चीन भारत से आगे निकल गया था। चीन और भारत की अर्थव्यवस्थाओं के उदारीकरण से पहले, उनके बीच बहुत कम या कोई बातचीत नहीं हुई थी। नीचे, संबंधों के लिए इन उदारीकरण नीतियों के प्रभाव का एक तर्क प्रस्तुत किया जाएगा।

जैसा कि पिछले खंड (5.2) में प्रस्तुत किया गया है, ऐसा लगता है कि वर्तमान में संबंध स्थिर अवस्था में हैं। संबंधों का स्थिर होना उन प्रक्रियाओं का हिस्सा है जो दोनों देशों के घरेलू और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर हुई हैं। सबसे पहले, दोनों देशों में घरेलू स्तर पर आर्थिक सुधारों (उदारीकरण) ने राष्ट्रीय स्तर पर नीति में बदलाव का मार्ग प्रशस्त किया। इसने संबंधों में नई संभावनाओं को खोला, जहां दोनों पक्ष व्यापार और सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं। दूसरे, चीन और भारत के बीच बढ़ते व्यापार ने मुख्य रूप से राजनीतिक स्तर पर, लेकिन सामाजिक स्तर पर भी एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ाई। तीसरे, इस प्रकार एक दूसरे पर निर्भरता ने सैनिक बल के उपयोग को और अधिक महंगा बना दिया है, क्योंकि एक दूसरे पर निर्भरता हमेशा कमजोरी के साथ आती है। नीचे कुछ सबसे महत्वपूर्ण राजनयिक आदान-प्रदान दिए गए हैं, जो अभी बताई गई प्रक्रिया का हिस्सा हैं:

1988 – राजीव गांधीजी की चीन यात्रा (शांतिपूर्ण सहयोग के 5 सिद्धांत) के बारे में अधिक जानकारी पिछले भाग में दी गई है: 5.1 ऐतिहासिक संदर्भ में चीन-भारत संबंध।

2003 – वाजपेयी की चीन यात्रा (संबंधों और व्यापक सहयोग के सिद्धांतों पर घोषणा), इसके अतिरिक्त विशेष प्रतिनिधियों की नियुक्ति की गई, जो समग्र द्विपक्षीय संबंधों के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से सीमा समझौते की रूपरेखा का पता लगाते हैं। इस समूह को संयुक्त अध्ययन समूह (JSG) कहा जाता है। 2003 के समझौते को चीन-भारत संबंधों में एक सफलता के रूप में देखा गया।

2005 – वेन जियाबाओभारत का दौरा (संयुक्त वक्तव्य जारी किया और द्विपक्षीय सहयोग से संबंधित बारह दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए) उदाहरण के लिए, "चीन-भारत सीमा प्रश्न के निपटारे के लिए राजनीतिक मापदंडों और मार्गदर्शक सिद्धांतों पर समझौता", "व्यापक व्यापार और आर्थिक पर चीन-भारत संयुक्त अध्ययन समूह की रिपोर्ट"

सहयोग", "चीन-भारत वित्तीय वार्ता के शुभारंभ पर समझौता ज्ञापन (एमओयू)। उन्होंने शांति और समृद्धि के लिए एक रणनीतिक और सहकारी साझेदारी की स्थापना की घोषणा की।

• अरुणाचल प्रदेश में सीमा विवाद और राजनीतिक और आर्थिक अंतरनिर्भरता पर एक नव-यथार्थवादी मूल्यांकन

अरुणाचल प्रदेश में क्षेत्रीय विवाद चीन-भारत संबंधों में एक गर्म बिंदु बना हुआ है। चीन और भारत दोनों ने सीमाओं पर मजबूत प्रतिरोध स्थापित किया है, जिससे स्थिरता की भावना पैदा हुई है। सैनिक परिसंपत्तियों के संदर्भ में स्थिरता, इस मामले में एक नव-यथार्थवादी दृष्टिकोण से अनिश्चितता के बजाय एक है। एक नव-यथार्थवादी दृष्टिकोण से, ऐसा लगता है कि अरुणाचल प्रदेश में चीन और भारत के बीच सुरक्षा दुविधा होगी। प्रवृत्तियों से पता चलता है कि दोनों पक्ष सीमा पर प्रतिरोध क्षमता स्थापित करने के लिए उत्सुक हैं। कई तरह के उद्देश्यों के बावजूद, यह अभी भी एक दूसरे के लिए खतरा है। इससे अनिश्चितता पैदा होती है जहां आंतरिक संतुलन एक आवश्यकता बन जाती है, और जब तक अनिश्चितता बनी रहती है, तब तक आंतरिक संतुलन जारी रहेगा, जो संभवतः सुरक्षा दुविधा को जन्म देगा। सीमा पर तनाव की अनगिनत बार रिपोर्ट की गई है, और उन रिपोर्टों के अनुसार एक गलती बहुत महंगी पड़ सकती है। जब सीमा के दोनों ओर से गश्ती दल संपर्क में आते हैं, तो इसका मतलब है कि एक भी गलती बढ़ सकती है और रिश्ते को गहरे संकट में डाल सकती है। इसलिए, चीन और भारत को ऐसी घटनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए, दूसरे शब्दों में सैनिक निर्माण। तैयार होने का मतलब है कि दोनों के पास ज़रूरत पड़ने

पर प्रतिरोध और जवाबी कार्रवाई करने की क्षमता होनी चाहिए। हालाँकि, यह संभावना है कि मौजूदा गतिरोध वैसा ही बना रहेगा, जैसा कि दोनों देशों के पास परमाणु और आईसीबीएम क्षमताएँ हैं। परमाणु क्षमता होने के स्थिरीकरण प्रभाव की वकालत कीहन और नाई ने की है, जो तर्क देते हैं:

परमाणु हथियारों की विनाशकारी क्षमता किसी भी परमाणु शक्ति के खिलाफ किसी भी हमले को खतरनाक बनाती है। परमाणु हथियारों का इस्तेमाल ज्यादातर निवारक के तौर पर किया जाता है। बहुत कमज़ोर देशों के खिलाफ परमाणु कार्रवाई की धमकियाँ कभी-कभी कारगर हो सकती हैं, लेकिन वे अपने विरोधियों के बीच संबंधों को मज़बूत करने की उतनी ही या उससे भी ज्यादा संभावना रखती हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, क्या संघर्ष की लागत बढ़ गई है और इस प्रकार युद्ध में बढ़ने वाली नकारात्मक घटनाओं का जोखिम कम हो गया है। युद्ध का जोखिम अभी भी बना हुआ है और यह देखते हुए कि सैनिक शक्ति हमेशा आर्थिक शक्ति पर हावी रहेगी, इस अर्थ में कि आर्थिक साधन सैनिक बल के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते, यह संभावना है कि सैनिक शक्ति आर्थिक शक्ति के समान गति से बढ़ेगी।

चीन-भारत संबंधों के कई पहलू हैं जो नव-यथार्थवादी शक्ति संतुलन सिद्धांत के पीछे के तर्क को मज़बूत कर सकते हैं। सबसे पहले, प्रभाव के लिए एक क्षेत्रीय संघर्ष स्पष्ट है क्योंकि चीन और भारत अपनी क्षेत्रीय स्थिति सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से दक्षिण एशिया के देशों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी संपर्क कर रहे हैं। यह एक नव-यथार्थवादी दृष्टिकोण से एक शून्य-योग खेल है, जहाँ क्षमताओं का वितरण संरचना के परिवर्तन को तय करता है। एक और सहयोगी का अर्थ है उस सहयोगी की क्षमताओं तक पहुंच (कम से कम एक निवारक के रूप में)। पाकिस्तान के साथ चीन की हर मौसम की नीति को देखने का मूल रूप से मतलब है कि पाकिस्तान की क्षमताएं चीन की क्षमताओं में जुड़ जाती हैं।

निष्कर्ष

सेवामुक्त और स्क्रेप की गई प्रौद्योगिकियों पर इस तरह के त्वरित अनुसंधान को "दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकी" के रूप में माना जा सकता है। और इस तरह की प्रौद्योगिकी पर शोध-संचालित नवाचार में सहायता करेगा और ऑफसेट क्लॉज में आवश्यक संशोधन भारत को सामान्य अनुसंधान की ओर ले जाएगा। यह स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए कि ऑफसेट क्लॉज में एक ढाल का सुझाव देने का प्राथमिक कारण प्रौद्योगिकी खरीद के आधार पर रक्षा सहयोग में पारस्परिकता को सक्षम करना है। इस प्रकार, यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालते हुए समाप्त होता है कि भारत के रक्षा आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त अनुसंधान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की आवश्यकता है, जिसे ऑफसेट क्लॉज पारस्परिकता सुनिश्चित करके सुगम बनाएगा। इस तरह की पारस्परिक रक्षा खरीद भारत की रक्षा क्षमता में विविधता लाएगी, जिससे कई रक्षा प्रौद्योगिकी उत्पादनों में तुलनात्मक लाभ प्राप्त होगा और आत्मनिर्भर भारत प्राप्त करने की क्षमता प्रदान होगी।

भारत तेजी से जटिल और चुनौतीपूर्ण साइबर सुरक्षा परिदृश्य का सामना कर रहा है। हाल के साइबर हमले भारत में साइबर सुरक्षा के लिए अधिक मज़बूत और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता को इंगित करते हैं। सरकार, संगठनों और व्यक्तियों को अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे को सुरक्षित करने और साइबर खतरों से खुद को बचाने के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए। इसमें उन्नत तकनीकों में निवेश करना, सुरक्षा नीतियों और प्रक्रियाओं को मज़बूत करना और लोगों को साइबर सुरक्षा सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए जागरूकता और

प्रशिक्षण कार्यक्रम बढ़ाना शामिल है। एक साथ काम करके, भारत साइबर खतरों का प्रभावी ढंग से मुकाबला कर सकता है और सभी के लिए एक सुरक्षित डिजिटल वातावरण बना सकता है।

भारत के डिजिटल विकास के परिणामस्वरूप साइबर हमलों का खतरा बढ़ गया है। भारतीय सरकार और निजी क्षेत्र ने साइबर सुरक्षा में सुधार के लिए कई उपाय किए हैं, लेकिन अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। भारत के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में आम जनता में जागरूकता की कमी, कुशल साइबर सुरक्षा पेशेवरों की कमी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचा शामिल हैं। भारत को अपने नागरिकों और व्यवसायों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी साइबर सुरक्षा में सुधार करने में निवेश करना जारी रखना चाहिए। भारत में साइबर सुरक्षा की वर्तमान स्थिति जटिल और चुनौतीपूर्ण है। प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग ने भारत को साइबर हमलों के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया है। जबकि सरकार ने देश के साइबर सुरक्षा बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए उपाय किए हैं, अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। साइबर खतरों और सुरक्षित ऑनलाइन प्रथाओं के बारे में आम जनता में जागरूकता की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। इसके अतिरिक्त, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में कुशल पेशेवरों की कमी देश की समग्र सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। फिर भी, जागरूकता बढ़ाने, बुनियादी ढांचे में निवेश करने और कुशल पेशेवरों को विकसित करने के निरंतर प्रयासों से, भारत अपनी साइबर सुरक्षा स्थिति में सुधार कर सकता है और साइबर खतरों से उत्पन्न जोखिमों को कम कर सकता है।

संदर्भ

1. ए.के. एंटनी ने चीन की घुसपैठ को स्वीकार किया, 30 सितंबर 2011 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत, डीएनए, 28 सितंबर 2011।
2. "चीन-पाकिस्तान सैन्य संबंधों ने भारत को परेशान किया" फाइनेंशियल टाइम्स। 27 नवंबर 2009. 16 मई 2016 को लिया गया।
3. लिंटर, बर्टिल (30 अक्टूबर 2020)। "भारत में उग्रवाद का समर्थन करने की चीन की धमकी के पीछे" एशिया टाइम्स। मूल से 31 अक्टूबर 2020 को संग्रहीत। 31 अक्टूबर 2020 को लिया गया।
4. चीन ने दक्षिण चीन सागर अन्वेषण परियोजनाओं पर भारत को चेतावनी दी संग्रहीत 24 सितंबर 2011 को वेबैक मशीन, द हिंदू, 15 सितंबर 2011।
5. आमिर पीरज़ादा (16 अक्टूबर 2020)। "तिब्बती 'गुप्त' भारतीय बल में सेवारत हैं"। बीबीसी समाचार। मूल से 19 अक्टूबर 2020 को संग्रहीत। 28 मई 2022 को लिया गया।
6. गीता मोहन [फिनिश में] (1 जनवरी 2022)। "चीन ने भारतीय सांसदों के तिब्बती स्वागत समारोह में शामिल होने का विरोध किया, निर्वासित तिब्बत सरकार ने जवाबी हमला किया"। इंडिया टुडे। मूल से 1 जनवरी 2022 को संग्रहीत। 28 मई 2022 को लिया गया।
7. "दक्षिण एशिया में प्रमुख शक्ति प्रतिद्वंद्विता" विदेश संबंध परिषद। मूल से 24 अप्रैल 2023 को संग्रहीत किया गया। 24 अप्रैल 2023 को लिया गया।
8. "भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंधों के लिए चीन की खतरे की धारणा का विश्लेषण" फ़र्स्टपोस्ट। 8 अप्रैल 2023। मूल से 8 अप्रैल 2023 को संग्रहीत। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
9. चन्हूदड़ो, अर्नेस्ट जे. मैके, अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी, 2090